लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ
University of Lucknow, Lucknow

Press Note 16 July 2020

आज दिनांक 16 जुलाई 2020 को लखनऊ विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग द्वारा दो दिवसीय ऑनलाइन संगोष्ठी का शुभारंभ हुआ। जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्री डॉक्टर रमेश पोखरियाल निशंक जी सम्मिलित हुए। लखनऊ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर आलोक कुमार राय इस सभा के अध्यक्ष पद को अलंकृत किया। थाईलैंड स्थित शिल्पकार्न यूनिवर्सिटी, बैंकॉक के संस्कृत विभाग के विजिटिंग प्रोफेसर डॉक्टर नरसिंह चरणा पंडा, कामेश्वरसिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रोफेसर सर्वनारायण झा, रांची विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग के अध्यक्ष प्रोफेसर चंद्रकांत शुक्ला, प्रोफ़ेसर गंगाधर पंडा, कुलपति, कोल्हान यूनिवर्सिटी, झारखंड एवं शिल्पकार्न यूनिवर्सिटी के संस्कृत अध्ययन केंद्र के निर्देशक प्रोफेसर सोम्बत मांगमीसूखश्री विद्वान वक्ता के रूप में सम्मिलित हुए।

इस ऑनलाइन संगोष्ठी के आयोजक पद्मश्री प्रोफेसर बृजेश कुमार शुक्ला जी ने माननीय मंत्री, कुलपति, विद्वान वक्ताओं एवं अन्य प्रतिभागियों का वाचिक स्वागत करते हुए इस संगोष्ठी का रूपरेखा एवं वैशिष्ट्य को प्रकट किया। उन्होंने बताया कि संस्कृत वाङ्मय में अनेक वैज्ञानिक रहस्य निहित हैं वेदों में वच आदि औषध के रूप में कोरोना जैसी अन्य संक्रामक बीमारियों के उपाय वर्णित है।

मुख्य अतिथि डॉ रमेश पोखरियाल निशंक जी ने संस्कृत वाङ्मय में विद्यमान अनेक तथ्यों को सर्व समाज के लिए सुलभ कराने की आवश्यकता पर बल दिया। संस्कृत तथा विज्ञान के मध्य सामंजस्य हेतु अनेक योजनाओं का संकेत किया, जिनके माध्यम से संस्कृत वाङ्मय में विद्यमान वैज्ञानिक तत्वों को वैज्ञानिकों के सहयोग से समाज के सामने प्रमाणित करने की आवश्यकता बताई। संस्कृत को सरल विधि से जन जन तक पहुंचाने तथा उसे ज्ञान विज्ञान का कोष होने की जानकारी समाज को देने की आवश्यकता है ऐसा उन्होंने बताया । संस्कृत न केवल एक भाषा के रूप में अपितु समग्र ज्ञान का भंडार को खोलने के लिए यह एक साधन है। भारत को आत्म निर्भर एवं प्रतिष्ठित करने के लिए संस्कृत की भूमिका महत्वपूर्ण है ऐसा उन्होंने बताया ।

लखनऊ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर आलोक कुमार राय जी ने विभिन्न उदाहरणों के माध्यम से संस्कृत भाषा में किस प्रकार विज्ञान ग्रंथों को लिखा गया है उसके विषय में सभा को अवगत कराया।

उन्होंने संस्कृत वाङ्मय में गणित, भौतिक शास्त्र, रसायन विज्ञान, जंतु विज्ञान, वनस्पति विज्ञान एवं आयुर्विज्ञान का भी उल्लेख है ऐसा भी बताया। लखनऊ विश्वविद्यालय के गणित एवं खगोल शास्त्र विभाग में गणित से संबंधित अनेक पांडुलिपियां विद्यमान है, जो की संस्कृत भाषा में उल्लिखित है। शोध के द्वारा इन सब का प्रकाशित होना चाहिए ऐसा माननीय कुलपति जी ने आग्रह किया।

प्रोफेसर नरसिंह चरण पंडा जी ने अनेक उदाहरणों के माध्यम से बहुत ही द्रव्यों की वैज्ञानिक विवेचना करके संस्कृत वाङ्मय में सृष्टि विज्ञान से स्वास्थ्य विज्ञान तक की पुष्टि करके संस्कृत वाङ्मय में विद्यमान ज्ञान विज्ञान को आज के समय में व्यवहारिक तथा प्रासंगिक बताया।

प्रोफेसर सर्वनारायण झा जी ने दशमलव से लेकर शून्य, एक से अर्बुदादि पर्यंत संख्याओं को अप्रत्यक्ष रूप से वेदों में परोक्ष बताकर यह सिद्ध किया की गणित तथा विज्ञान के अनेक सिद्धांत प्राचीन शास्त्रों से विशेषज्ञों तक सीमित न होकर जनसामान्य तक पहुंचना चाहिए।

प्रोफेसर चंद्रकांत शुक्ला जी ने विमान शास्त्र को दृष्टि में रखकर अनेक ऐतिहासिक प्रमाण प्रस्तुत किए जिनसे भारतवर्ष में विमान विज्ञान की प्राचीन परंपरा प्रकाश में आई। अनेक प्रकार की विमानों, विमान के अभयंबू तथा विमान चालकों के लक्षणों को बता कर इन्होंने विमान शास्त्र पर आधुनिक अनुसंधान की आवश्यकता बताई। भरद्वाज के वैज्ञानिक प्रकरण में अनेक प्रकार की ऊर्जा तथा अनेक प्रकार के विमानों में खनिज तथा वानस्पतिक इंधन तथा अदृश्य हो जाने वाले विमानों का उल्लेख शोध का विषय है।

इस ऑनलाइन संगोष्ठी के संचालक डॉ प्रयाग नारायण मिश्र एवं संयोजक डॉ अशोक कुमार शतपथी रहे।